भारतीय ज्ञान दृष्टि और पर्यावरण

पूनम भूषण

असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र राज0स्ना0महा0 अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग

Abstract

भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है। जितना यहां मानव जाति का ज्ञात इतिहास है। भारतीय दर्शन यह मानता है कि इस देह की रचना पर्यावरण के महत्त्वपूर्ण घटकों – पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से हुई है।

वेदों में जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। कल्याणकारी संकल्पना, शुद्ध आचरण, निर्मल वाणी एवं सुनिश्चित गति क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मूल विशेषताएं मानी जाती है और पर्यावरण संतुलन भी मुख्यतः इन्हीं गुणों पर आश्रित है। भारत के मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व मानव जीवन के कल्याणार्थ पर्यावरण का महत्व और उसकी रक्षा, प्रकृति से सान्नियध्य, संवेदनशीलता, रोगों के उपचार तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक उपयोगी तत्व निकाले थे। जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते है।

हिन्दू जीवन के चार महत्त्वपूर्ण आश्रमों में से ब्रहमचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास का सीधा सम्बन्ध वनों से है। पर्यावरण ने जीवन को सामर्थ्यपूर्ण बनाने में अपना विशेष योगदान दिया है।

मानव और प्रकृति कही न कही मूर्त तथा अमूर्त रूप में एक दूसरे से जुड़े है भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है जितना यहां मानव जाति का इतिहास है। भारतीय दर्शन यह मानता है कि इस देह की रचना पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटको–पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से हुई है। समुद्र मंथन में वृक्ष जाति के प्रतिनिधि के रूप में कल्पवृक्ष का निकलना, देवताओं द्वारा उसे अपने संरक्षण मे लेना इसी तरह कामधेनु और ऐरावत हाथी का संरक्षण इसके उदाहरण है।

वेदों में जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। कल्याणकारी संकल्पना, शुद्ध आचरण,

निर्मल वाणी एवं सुनिश्चित गति क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मूल विशेषताएं मानी जाती है और पर्यावरण संतुलन भी मुख्यतः इन्हीं गुणों पर आश्रित है।

हिन्दुत्व वैज्ञानिक जीवन पद्धति है, प्रत्येक हिन्दू परम्पराओं के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है। हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में एक बात दुनिया मानती है कि हिन्दू दर्शन,"जियो और जीने दो" के सिद्धान्त पर आधारित है यह विशेषता किसी अन्य धर्म मे नहीं है। हिन्दू धर्म का सह–अस्तित्व का सिद्धान्त ही हिन्दुओं को प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।

हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है। इसलिए उन्होने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है।

"वृक्षाद् वर्षति वर्जन्यः पर्जनयादत्र सम्भवः"

अर्थात् वृक्ष जल है, जल अन्न है, अन्य जीवन है।

जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते है। "अरण्य ते पृथ्वी स्योनमस्तु" यही कारण है कि हिन्दू जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों मे से ब्रहमचार्य, वानप्रस्थ और सन्यास का सीधा सम्बन्ध वनों से है। हिन्दू दर्शन में एक वृक्ष की मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है।

"दशकूप समावापीः दशवापी समोह्रदः।

दशह्रद समः पुत्रो दशपुत्र समोदुमः"।।

देवों के देव महादेव तो बिल्व–पत्र और धतूरे से ही प्रसन्न होते है।

सरस्वती को पीले फूल पसन्द है। धन की देवी लक्ष्मी माता को कमल और गुलाब से प्रसन्न किया जाता है।

गीता का यह श्लोकांश "अश्वत्थ, सर्ववृक्षाणाम्" वृक्षों की पर्यावरण का संतुलित रखने की महति भूमिका को रेखांकित करने का सजीव उदाहरण है कि वृक्षों में भी जीवन है।

गीता मे भगवान कृष्ण का कथन है कि वृक्षों मे मैं पीपल हूँ और मत्स्य पुराण में पेड़ों को पुत्रों की संख्या से अभिरित करना पेड़ों के महत्व को स्पष्ट करते है।

हमारी संस्कृति में नीम को पूर्ण चिकित्सक, आंवले को पूर्ण भोजन, पीपल को शुद्ध वायुदात्री, पाकड़ और वट के युग्म वृक्षों को जल संग्राहक एवं वट को पूर्ण घर माना गया है।

सामान्यतः मान्यता है कि विज्ञान जहाँ समाप्त होता है आध्यात्म वहाँ से प्रारम्भ होता है किंतु ऐसा नही है। यदि हम ध्यान से देखे तो विज्ञान और आध्यात्म एक सिक्के के दो पहलू है।

विज्ञान कि विभिन्न महत्वपूर्ण ज्ञान को जीवन में उतारना भी हमारे दर्शन का मुख्य उद्देश्य रहा है। दक्षिण एवं पूर्व की ओर सिर करके सोना, सूर्य नमस्कार योग और पूजा द्वारा अपनी मानसिक शक्ति को दृढ़ करना आदि ऐसे तमाम क्रियाकलापों को जीवन का अंग बनाया गया है। जिससे लोग कम से कम बीमारी का शिकार हो और समाज स्वस्थ हो। भगवान दन्तात्रेय के 24 गुरूओं में 11 पशु–पक्षी, 5 मनुष्य, 5 प्रकृति के पंच तत्व तथा समुद्र, सूर्य और चंद्रमा थे। इसी कारण, वसुधैव कुटुंवकम् हिन्दू दर्शन का महत्वपूर्ण अंग है।

वेदों का स्पष्ट संदेश है कि प्रकृति का आदर किया जाए। पृथ्वी को दृढ़ करें, उसकी हिंसा न करें (यजुर्वेद 13/18) औषधियों व जल को यथास्थान सुरक्षित रखा जाए व उन्हें नष्ट न होने दिया जाए। वनस्पतियों अपने स्थान पर स्थिर हों। हम सदैव पाप रहित व सम्पूर्ण कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें। और द्युलोक, पृथ्वी, अंतरिक्ष, समुद्र औषाधियां आदि अनिष्टों का निवारण करके हमें सुख–शान्ति प्रदान करें।

प्रकृति के साथ सुसंबद्धता मध्यकालीन भारत तथा मुगलकाल में भी एक प्रमुख लक्ष्य रहा है तथा मुगलकाल में कला व स्थापत्य कला का अद्वितीय विकास प्रकृति के साथ इस तारतम्यता को प्रदर्शित करता है कि उक्त काल में मुस्लिम तथा हिंदू कला व परंपराओ के तत्वों का सुखद मिश्रण था, जिस तरह शरीर की शोभा प्राण की होती है उसी प्रकार पर्यावरण की शोभा वनों से व वनो की शोभा वन्य प्राणियो से होती है।

मानव वृक्षों के बिना जीवित नही रह सकता इस लिए नही कि उसे मकान, ईधन, चारा, छाया व फल, औषधि तथा रोजगार आदि वृक्षों से प्राप्त होते है, वरन इसलिए भी कि वृक्ष जलवायु में संतुलन बनाकर तीक्ष्णता का शमन करते है, भूमि कटाव से रक्षा करते है, मानव का समूचा अस्तित्व ही मृदा व जल के समुचित नियंत्रण पर निर्भर है। व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वार्थ त्यागकर सामाजिक स्वार्थ को मान्यता देनी चाहिए। प्रकृति एवं मनुष्य में सह–अस्तित्व की भावना का विकास हो मनुष्य को प्रकृति के प्रति मित्रता का भाव रखना होगा, तभी वह पर्यावरण को सुरक्षित रख सकेगा। पर्यावरण को सुरक्षित संतुलित बनाये रखना प्रत्येक व्यक्ति को अपना परमकर्तव्य

समझना होगा आज हमारे सामने सबसे बडी समस्या प्रदूषण एवं शुद्ध पर्यावरण की उतनी नही है जितनी पश्चिम की भौतिक वादी सभ्यता के फलस्वरूप होने वाले दुष्परिणामों की है, जिन्हें अपनाकर भारतीय मूल्य परंपराओ एवं संस्कृति के मूलभूत आयामो पर चोट पहुंचाई जा रही है, जिसके फलस्वरूप चराहगाह नष्ट हो रहे है। पशुपालन उजड़ रहे है। झीले सूख रही है नदी के पानी के प्रदूषण के फलस्वरूप मछुआरो का जीवन अनिश्चित हो रहा है। रासायनिक कीटनाशकों के कारखानो ने हजारों की जान ले ली जाती है।

सरकार द्वारा पर्यावरण रक्षा का उतरदायित्व वहन करने हेतु कानूनों का निर्माण किया गया है। फिर भी विभिन्न प्रकार के प्रदूषण जल वायु भूमि ध्वनि आकाश प्रदूषण निरतंर बढ रहा है।

ईसा की बीसवीं शताब्दी के अन्तिम लगभग तीन चार दशकों से पर्यावरण असंतुलन की स्थिति पर विश्व स्तर मे चिन्ता व्याप्त रही है। विज्ञान, औद्योगिकी, प्रगाति ने प्राकृतिक संसाधना के दोहन ने तीव्र गाति से सम्पूर्ण परिवेश को दूषित कर डाला है। मानव जाति, पशु–पक्षी, सभी पर इसका प्रभाव पड़ा है। राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण की सुरक्षा के लिए विचार किया गया। विभिन्न पर्यावरण चिपको आन्दोलन, भीनासार आन्दोलन, नर्मदा बचाओं आन्दोलन तथा अनेक सरकारी प्रयास किये गये।

वर्तमान में पेड़–पौधों एवं पशुओं की कई प्रजातियां समाप्त हों चुकी है या समाप्त होने की कगार पर है। मनुष्य के क्रिया कलापों में मुख्य रूप से युद्ध के कारण प्रयोग किए गए रासायनिक एवं आणाविक हथियारों ने प्रकृति को दुष्प्रभावित किया है। इस कारण दिन–प्रतिदिन पर्यावरण का आवरण छिन्न–भिन्न हो रहा है।

निष्कर्ष– प्रकृति तथा मानव का घनिष्ट सम्बन्ध रहने के बावजूद पर्यावरण असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। वेद, पुराण उपनिषद् में पर्यावरण, प्रकृति के महत्व को तथा संतुलन को स्पष्ट किया गया है। लेकिन वर्तमान में मानव प्रगाति तथा विकास के कारण प्रकृतिक संसाधनों का तीव्र गाति से दोहन हो रहा है। जीवन को स्वस्थ रखने के लिए संतुलन बनाने की आवश्यकता की ओर मानव द्वारा ध्यान दिया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Hindi.speakingtree.in पर्यावरण संरक्षण और भारतीय संस्कृति, July-10-2003
2. Hindi.indiawater portel.org पर्यावरण और भारतीय संस्कृति, सतीश कुमार–3/25/14
3. www.ichnowk.in लोकेन्द्र सिंह
4. ममतातंवर AIJRA.vol-II-155.2015 वेदों मे प्रकृति व पर्यावरण चेतना
5. https://hindi.indianwaterportal.org भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण –प्रो चम्पाकुमारी